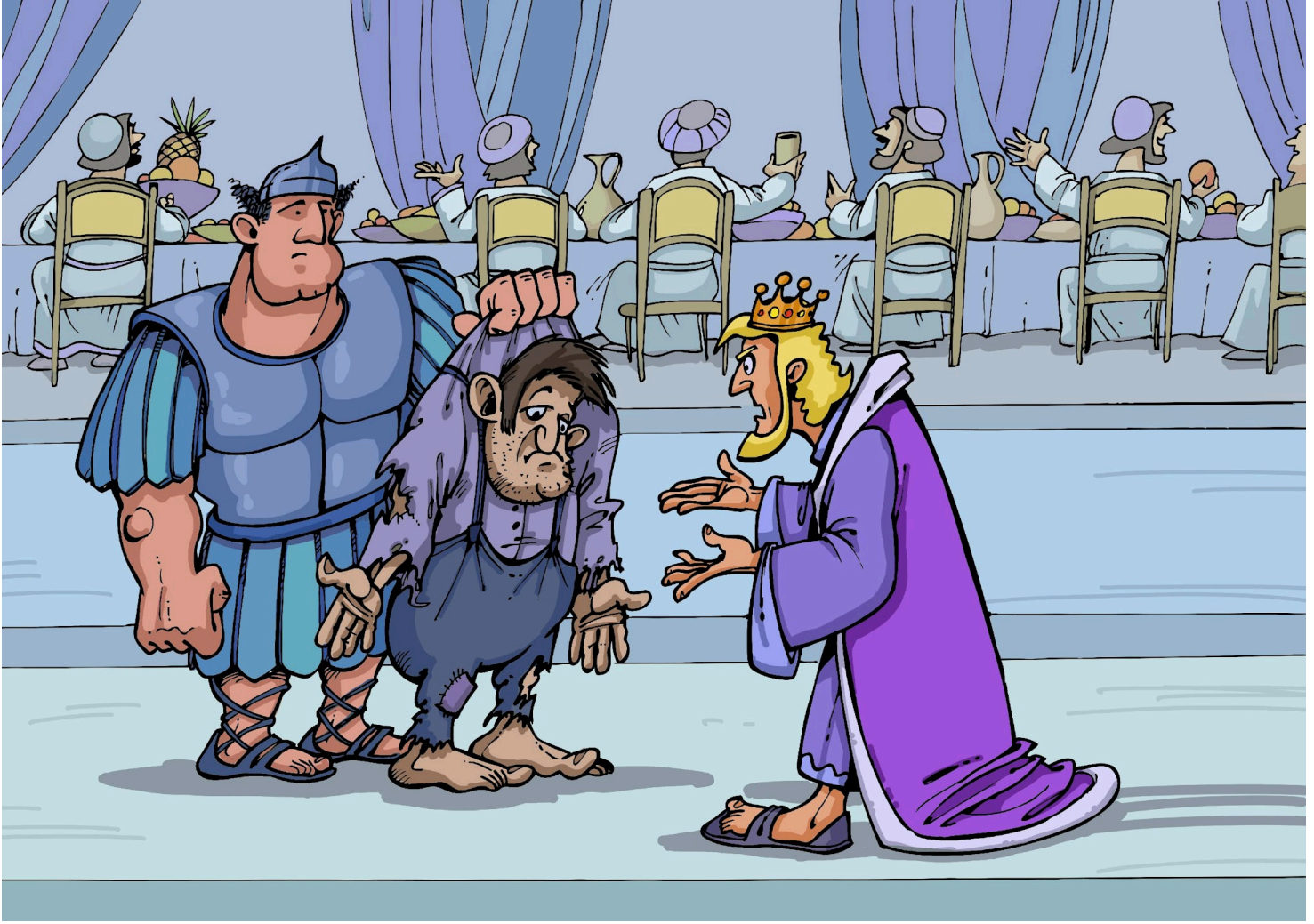






अनुचित ढंग से कपड़े पहने हुए

मत्ती 22:1-14

यीशु के दृष्टांत

शादी की मेजबानी के बारे में बात करें। एक राजा अपने बेटे की शादी की योजना बना रहा था, इसलिए उसने निमंत्रण पत्र भेजे।

चर्चा करना:

क्या आपने कोई पार्टी की थी?

आपने किसे आमंत्रित करना है, यह कैसे तय किया?

क्या कुछ लोग नहीं आ सके?

क्या कोई ऐसा व्यक्ति था जो आना नहीं चाहता था?

अगर आपके कोई भी दोस्त न आए तो आप क्या करेंगे?

यह राजा एक भव्य दावत का आयोजन कर रहा है; शादी की दावत के लिए सोचिए कितनी बड़ी दावत होगी!

चर्चा करना:

एक बड़ी दावत के लिए आपको किन-किन चीजों की आवश्यकता होगी?

आपको शायद खाने-पीने की चीजों और बैठने के लिए जगह की ज़रूरत होगी। शायद कुछ फूल, प्लेटें और पीने के गिलास भी?

आप सजने-संवरने और कुछ खास पहनने की इच्छा रखेंगे।

आप क्या पहनेंगे?

अगर राजा इस पार्टी की योजना बना रहे होते, तो यह बहुत ही व्यस्त जगह होती, जहां कई लोग राजा के बेटे की शादी के लिए एक भव्य पार्टी की तैयारी में जुटे होते।

राजा ने अपने सेवकों को उन लोगों को लाने के लिए भेजा जिन्हें आमंत्रित किया गया था।

उन्होंने उनसे कहा, सब कुछ तैयार है! एक भव्य दावत का आयोजन किया गया है, हमने जानवरों को मारकर सारा मांस पका लिया है। शादी में आइए! लेकिन लोगों ने न आने के बहाने बनाए। कुछ लोग नौकरों के साथ बहुत बुरा बर्ताव करते थे, और कुछ लोगों ने तो नौकरों को मार ही डाला!

जब राजा ने यह सुना, तो वह बहुत क्रोधित हुआ। उसने सेना भेजकर उन लोगों को नष्ट करवा दिया जिन्होंने सेवकों की हत्या की थी, और उसने उनके नगर को जलाकर राख कर दिया।

तब राजा ने अपने सेवकों से कहा कि शादी की तैयारियां तो हो चुकी हैं, लेकिन जिन्हें आमंत्रित किया गया है वे आने के योग्य नहीं हैं।

इसलिए राजा ने सेवकों को आदेश दिया कि वे सड़कों पर जाएं और जितने भी लोग मिलें, उन सभी को शादी में आमंत्रित करें, चाहे वे अच्छे हों या बुरे। अंततः उनकी शादी में काफी मेहमान आए।

राजा अंदर आया और उसने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जो शादी में आया था, लेकिन उसने शादी के कपड़े नहीं पहने थे।

उसने उस आदमी को "दोस्त" कहकर पुकारा और उससे पूछा कि वह शादी के कपड़े पहने बिना क्यों आया, लेकिन उस आदमी के पास कोई जवाब नहीं था और उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

राजा इस बात से नाराज़ नहीं थे कि वह व्यक्ति उपहार नहीं लाया। बात यह नहीं थी कि वह क्या लाया था; बात तो उसके शादी के कपड़ों की थी।

उस आदमी को शादी में रुकने की इजाज़त नहीं दी गई। उन्होंने उसे बांधकर बाहर निकाल दिया।

सभी को आमंत्रित किया गया था; लेकिन यह मेहमानों की ज़िम्मेदारी थी कि वे सुनिश्चित करें कि उनके पास शादी के कपड़े हों।





इस कहानी में राजा ईश्वर हैं, जो यीशु के विवाह की तैयारी कर रहे हैं।

सबसे पहले इस्राएलियों को आमंत्रित किया गया था, लेकिन उन्होंने अपने निमंत्रण को महत्व नहीं दिया, इसलिए परमेश्वर ने सभी को आमंत्रित किया, चाहे वे यहूदी हों या गैर-यहूदी।

सभी आमंत्रित हैं, लेकिन सही कपड़े पहने बिना आप शादी में प्रवेश नहीं कर सकते। सही कपड़ों का मतलब है कि आपके पास यीशु होना चाहिए।

यीशु के बिना कोई अंदर नहीं आ सकता। वह हमें “धार्मिकता का वस्त्र” प्रदान करता है।

यह धार्मिकता यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा उन सभी को दी जाती है जो विश्वास करते हैं। यहूदी और गैर-यहूदी में कोई भेद नहीं है (रोमियों 3:22)।

क्योंकि वे परमेश्वर की धार्मिकता से अनभिज्ञ थे और अपनी धार्मिकता स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे, इसलिए उन्होंने परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन नहीं हुए। क्योंकि मसीह व्यवस्था का उद्देश्य है, ताकि विश्वास करने वाले हर व्यक्ति को धार्मिकता प्राप्त हो (रोमियों 10:3-4)।

यह उसी के कारण है कि तुम मसीह यीशु में हो, जो हमारे लिए परमेश्वर की ओर से ज्ञान बन गया है - अर्थात्, हमारा धार्मिकता, पवित्रता और उद्धार (1 कुरिन्थियों 1:30)।

क्योंकि परमेश्वर ने मसीह को, जिसने कभी पाप नहीं किया, हमारे पापों के लिए बलिदान बनाया, ताकि हम मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ सही संबंध स्थापित कर सकें (2 कुरिन्थियों 5:21)।

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का एकमात्र मार्ग यीशु के माध्यम से ही है।

हम कभी भी इतने अच्छे नहीं हो सकते कि स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पा सकें। हम केवल यीशु ने हमारे लिए जो किया है उसे स्वीकार करके ही प्रवेश पा सकते हैं। उनके लहू ने हमारे पापों का प्रायश्चित्त किया; उनके लहू ने हमें परमेश्वर के साथ धर्मी या सही ठहराया। यीशु मसीह के क्रूस पर किए गए उद्धारकारी अनुग्रह और लहू के बिना, हम अपने कर्मों के आधार पर परमेश्वर के पास नहीं आ सकते। यदि हम यीशु के बिना परमेश्वर के पास आने का प्रयास करते हैं, तो हम स्वर्ग में प्रवेश पाने के लिए अपने कर्मों को अर्जित करने का प्रयास कर रहे हैं। यदि हम अपने कर्मों को अर्जित कर पाते, तो हम अपने कर्मों पर गर्व कर सकते थे। इसका हमारे कर्मों से कोई लेना-देना नहीं है, बल्कि यह केवल यीशु ने हमारे लिए जो किया है, उससे संबंधित है। हमारे अपने “धर्म” के कार्य परमेश्वर के लिए कुछ भी नहीं हैं। वह हमारे प्रयासों को गंदे, मैले चिथड़ों के समान देखता है।

हम इस कहानी को देखकर सोच सकते हैं कि समस्या यह थी कि वह व्यक्ति शादी में उपहार नहीं लाया था। इस व्यक्ति की गलती यह नहीं थी कि उसने ईश्वर को कुछ अर्पित नहीं किया या ईश्वर के लिए कुछ नहीं किया; इस व्यक्ति के पास उपहार की कमी नहीं थी।

वह धार्मिकता के उस वस्त्र से ठीक से सुसज्जित नहीं था जो यीशु का हमें दिया गया मुफ्त उपहार है।

राजा के लिए यही बात सबसे अधिक महत्वपूर्ण थी।

यह इस बारे में नहीं है कि हम ईश्वर को क्या दे सकते हैं, बल्कि उनके द्वारा हमें दिए गए उपहार को स्वीकार करने के बारे में है।

हाँ, आदम के एक पाप से सभी को दंड मिलता है, लेकिन मसीह के एक धार्मिक कार्य से सभी के लिए परमेश्वर के साथ सही संबंध और नया जीवन मिलता है (रोमियों 5:18)।

हम सब पाप से संक्रमित और अपवित्र हैं। जब हम अपने धार्मिक कर्मों का प्रदर्शन करते हैं, तो वे गंदे चिथड़ों के सिवा कुछ नहीं होते (यशायाह 64:6)।

उद्धार हमारे द्वारा किए गए अच्छे कामों का इनाम नहीं है, इसलिए हममें से कोई भी इसके बारे में घमंड नहीं कर सकता (इफिसियों 2:9)।



पाठ के प्रश्न और स्मरण श्लोक

41. दुष्ट किसान

1. उस व्यक्ति द्वारा भेजे गए पहले नौकर के साथ किसानों ने क्या किया?
2. उन्होंने बाकी नौकरों के साथ क्या किया?
3. उस व्यक्ति ने अंततः किसे भेजने का निर्णय लिया?
4. नौकर बेटे को कहाँ ले गए?
5. नौकरों ने बेटे के साथ क्या किया?

यशायाह 28:16

16 इन बातों के कारण मेरा स्वामी यहोवा कहता है: "मैं एक पत्थर—एक कोने का पत्थर—सिय्योन में धरती पर गाड़ूँगा। यह एक अत्यन्त मूल्यवान पत्थर होगा। इस अति महत्वपूर्ण पत्थर पर ही हर किसी वस्तु का निर्माण होगा। जिसमें विश्वास होगा, वह कभी घबराएगा नहीं।

42. राज्य व्यवसाय

1. पहले नौकर ने उस पैसे का क्या किया?
2. पिछले नौकर ने पैसा कहाँ रखा था?
3. राजा ने आखिरी सेवक के पैसों का क्या किया?

लूका 19:26

26 "स्वामी ने कहा, 'मैं तुमसे कहता हूँ प्रत्येक उस व्यक्ति को जिसके पास है और अधिक दिया जायेगा और जिसके पास नहीं है, उससे जो उसके पास है, वह भी छीन लिया जायेगा।

43. अनुचित ढंग से कपड़े पहने हुए

यूहन्ना 14:6 पढ़िए

1. यीशु हमेशा किससे परिपूर्ण रहता है?
2. यीशु मृत्यु नहीं है, वह शाश्वत है?
3. परमपिता ईश्वर तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग क्या है?

यशायाह 61:10

यहोवा मुझको अति प्रसन्न करता है। मेरा सम्पूर्ण व्यक्तित्व परमेश्वर में स्थिर है और प्रसन्नता में मग्न है।

यहोवा ने उद्धार के वस्त्र से मुझको ढक लिया। वे वस्त्र ऐसे ही भव्य हैं जैसे भव्य वस्त्र कोई पुरुष अपने विवाह के अवसर पर पहनता है। यहोवा ने मुझे नेकी के चोगे से ढक लिया है। यह चोगा वैसा ही सुन्दर है जैसा सुन्दर किसी नारी का विवाह वस्त्र होता है।

44. गिरफ्तार!

1. यहेजकेल 1:28 में, जब उसने प्रभु की महिमा देखी तो क्या हुआ?
2. भजन संहिता 41:9 में, किसने धोखा दिया (अपनी एड़ी उठाई)?
3. मत्ती 26:50 में यीशु ने यहूदा को क्या कहा?

भजन संहिता 103:2-4

हे मेरी आत्मा, प्रभु की स्तुति कर और उसके सभी उपकारों को न भूल: वही तेरे सभी पापों को क्षमा करता है, वही तेरे सभी रोगों को चंगा करता है, वही तेरे जीवन को विनाश से बचाता है, वही तुझे प्रेम और दया से सुशोभित करता है...

